विरागार्चना
(पूजा)

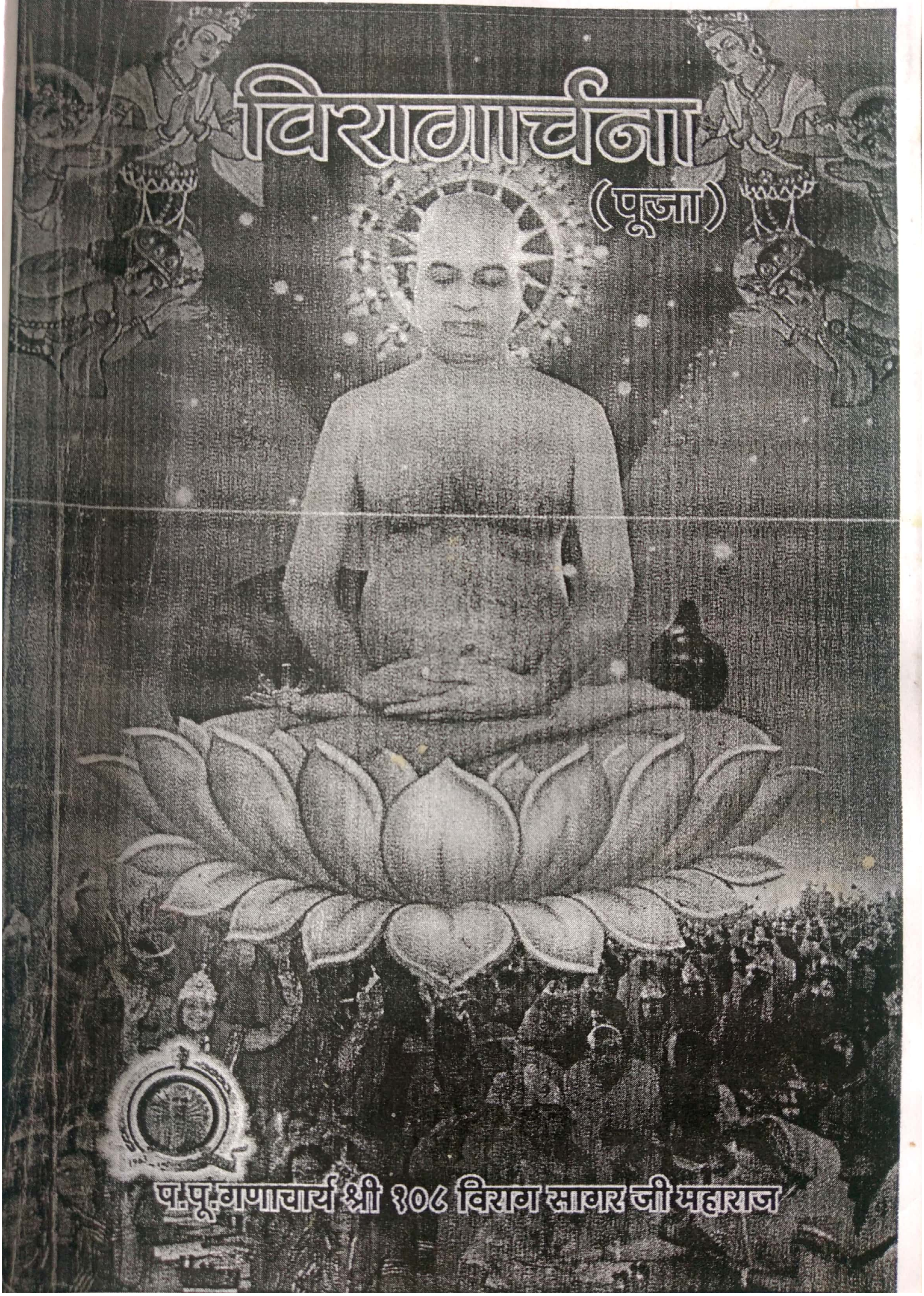

प.पू.गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज

Scanned with CamScanner

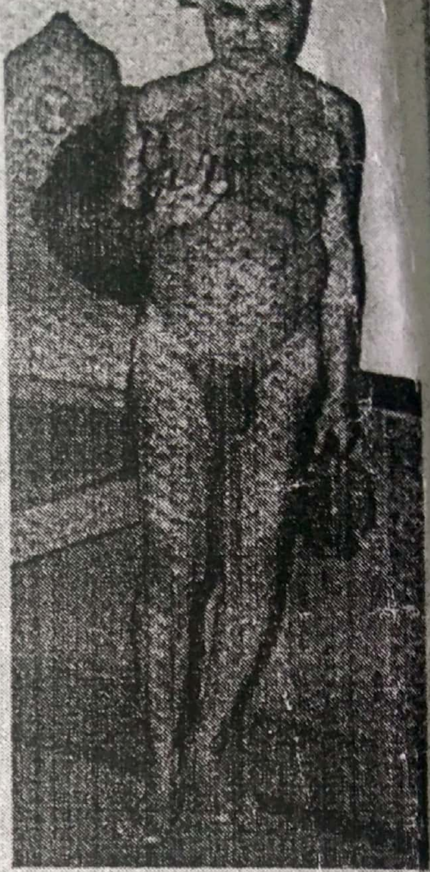

सूरि-विराग सागर-चरणों

विराग वन्दना

सूरि विराग सिंधु सदा जय हो तुम्हारी।
ऋषिवर हे दयासिंधु, सदा जय हो तुम्हारी।।
जिनदेव के सपूत सदा जय हो तुम्हारी।
जिनवाणी माँ के पूत सदा जय हो तुम्हारी।।

त्रय गुप्तियों में आप सदा रहते लीन हो।
नित पंचाचार पालने में भी प्रवीण हो।।
हे नाथ ! छह आवश्यकों में आप निरत हो।
हर एक अशुभ कामना से आप विरत हो।।

उत्तम क्षमादि धर्म दसों पाल रहे हो।
निज आत्मा के शुद्ध गुण सँभाल रहे हो।।
द्वादश तपों को तप रहे गुरुवर महान हो।
कलिकाल में अरिहन्त देव के समान हो।।

उपसर्ग, परीषह भी तुम्हें न डिगा सके।
कोई भी अशुभ कर्म न शक्ति दिखा सके।।
निज आत्मा की आपकी शक्ति महान है।
पाकर के तुम्हें धन्य-धन्य यह जहान है।।

शुद्धात्म देव लीन हो, गुरुदेव हमारे।
निज बोध कराते जो शरण आये तिहारे।।
मँझधार फँसी नाव उसे पार लगाते।
हे नाथ ! मोक्ष पथ की सदा राह दिखाते।।

है कल्पवृक्ष के समान गुरुदेव की शरण।
जो आता श्रीचरणों में वो पाता आचरण।।
हर दीन दुःखी के लिये गुरुवर दयाल है।
जपता जो गुरु नाम उसी के कमाल है।।

भक्ति से जो करे विधान गुरु विराग का।
वो राग त्याग कर बने गुरु विराग सा।।
भव-भव के दुःखों का वो भव्य अन्त करेगा।
निर्ग्रंथ बनके एक दिन अरिहन्त बनेगा।।

छत्तीस मूलगुण को निरतिचार पालते।
शिष्यों को वात्सल्य से गुरुवर सँभालते।।
जय जय विराग सिंधु सदा जय हो तुम्हारी।
स्वीकारो गुरुदेव वन्दना ये हमारी।।

(प्रतिज्ञा)

सूरि विराग सागर नमूँ, जो अनंत गुणवान।
पूजें गुण छत्तीस हम, पाने आतमज्ञान।।

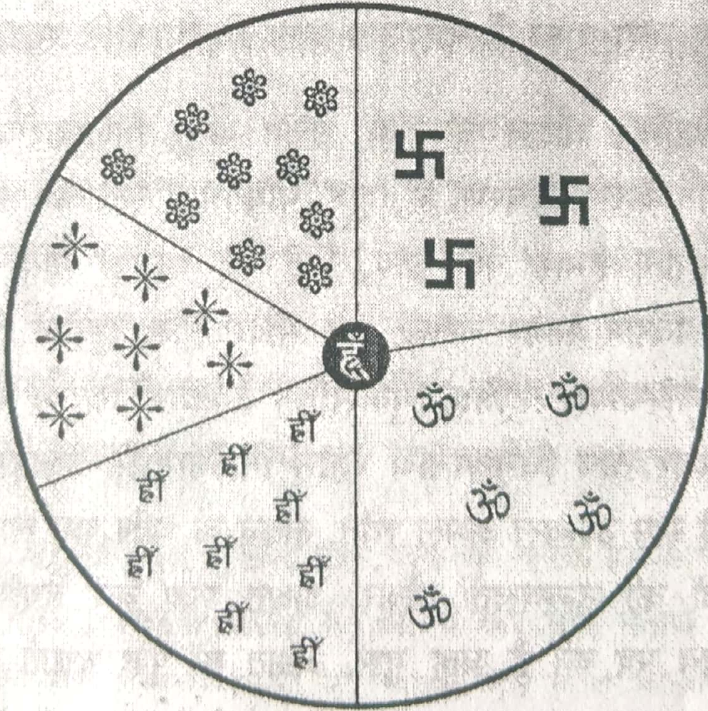

इति आचार्य विराग सागर महापूजा प्रतिज्ञानाय
मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Scanned with CamScanner

पूजन

(स्थापना)

संकल्प सुमेरु सा दृढ़ है, चारित्र क्षीर जल सा निर्मल।
अविराम मोक्ष पथ पर बढ़ते, धरते आगम अनुभव का बल।।
छत्तीस गुणों से मंडित हो, उर से करुणा रस छलकाते।
जो भव्य शरण में आते हैं, उनको सम्यक् पथ दिखलाते।।
आह्वानन् स्थापन करके, हिरदय में आज बुलाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

"परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।"

उज्ज्वल शीतल प्रासुक जल से, कंचन झारी भरकर लाये।
मिट जाये जन्म जरा मृत्यु, शुभ भाव हृदय में भर लाये।।
त्रैलोक्य पूज्य तव निर्मल गुण, जो तीनों रोग नशाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि शीतल चंदन में, उत्तम कर्पूर मिलाकर के।
अर्पित करते श्रीचरणों में, शुभ भक्तिभाव सजाकर के।।
भव ताप हमारा नश जाये, नित यह भावना भाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल अमल श्वेत, अक्षत के थाल भरा लाये।
भावों की उज्ज्वलता लेकर, अक्षत पूजा कर हर्षाये।।
अक्षय पद की है चाह मुझे, अक्षत के पुंज चढ़ाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

नाना विध कोमल पुष्पों की, ज्यों सौरभ मन को महकाती।
कामादिक भावों की चाहत, त्यों बढ़ती ही बढ़ती जाती।।
हो काम बाण विध्वंस मेरा, रागादिक भाव मिटाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंस पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भष्मक व्याधि सम क्षुधा रोग, भव-भव से दुःख देता आया।
षट्रस व्यंजन भी नित्य चखे, न तृप्त हुआ मन, न काया।।
हे नाथ ! क्षुधा के नाश हेतु, स्वातम रस को ललचाते है।
सूरि विराग सागर चरणों हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनिवरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिर्मय कंचन दीप अहा, ज्यों जगमग-जगमग करता है।
हो कितना भी अँधियार घना, क्षण भर भी नहीं ठहरता है।।
मोहान्धकार के नाश हेतु, शुभ कंचन दीप जलाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भौरे गुंजार करें आकर, दस गंध वह लाये हैं।
सुरभित चंदन, कर्पूर अगर, पूजा के भाव मिलाये हैं।।
आठों कर्मों के हवन हेतु, धूपायन धूप चढ़ाते हैं।
सूरि विरासागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतु के सरस सुगंधित फल, चुन-चुन करके हम लाये हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, अर्पित कर मोद मनाये हैं।।
अविनाशी मोक्ष महाफल की, चाहत निज हृदय सजाते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय महा मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जल चन्दन अष्ट द्रव्य लेकर, शुभ अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
पूजा के पूर्ण समर्पित कर, मन ही मन अति हर्षाया हूँ।
स्वातम अनर्घ्य पद पाने को, तव गुण से निज गुण ध्याते हैं।
सूरि विराग सागर चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ चतुर्विध संघ के, गुरु विराग आचार्य।
चरण शाँति धारा करूँ, मिले शान्ति अनिवार्य।।

(शान्तये शान्तिधारा)

लाया सुरभित पुष्प शुभ, पुष्पाञ्जलि को आज।
गुरु विराग पादाग्र धर, पाऊँ सुख साम्राज।।
।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

छत्तीस गुण मंडित अहा, पंचाचार प्रवीण।
षट् आवश्यक लीन नित, कर्म करें निर्जीर्ण।।
(इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

गुरुवर सम्यग्दर्श दो, गुरुवर सम्यग्ज्ञान।
गुरु सम्यक् चारित्र दो, गुरुवर दो निर्वाण।।
।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

त्रयगुप्ति अर्घ्य

मन की अशुभ प्रवृत्ति को तज दिया है,
रागादि भाव तज निज रस को पिया है।
व्यवहार और निश्चय मन गुप्ति धारी,
सूरि विराग सागर जय हो तुम्हारी।।

ॐ ह्रूँ मनोगुप्ति गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुख से असत् वचन जो न कभी उचारें।
शुद्धात्म ध्यान चिन्तन अध्ययन सम्हारें।।
व्यवहार और निश्चय वच गुप्ति धारी,
सूरि विराग सागर जय हो तुम्हारी।।

ॐ ह्रूँ वचनगुप्ति गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादि में प्रवृत्ति तन से न करते।
कायोत्सर्ग धर निज में ही विचरते।।
व्यवहार और निश्चय तन गुप्ति धारी।
सूरि विराग सागर जय हो तुम्हारी।।

ॐ ह्रूँ कायगुप्ति गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार अर्घ्य

सात जीवादि तत्त्वों का, अहा होता सच्चा श्रद्धान।
बढ़ाते नित श्रद्धा अपनी, हो श्रद्धा विषयक महानुष्ठान।।
निर्शंकित आदिक अंगों से, सहित यह कहा दर्शनाचार।
धन्य सूरि विराग सागर, पालते हो निज पंचाचार।।

ॐ ह्रूँ दर्शनाचार गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व का होता जिसमें बोध, चपल मन का हो जहाँ निरोध।
आत्मा होता जिससे शुद्ध, मिटा करते हैं सकल विरोध।।
काल विनयादिक अंगों से, सहित कहलाता ज्ञानाचार।
धन्य सूरि विराग सागर, पालते हो निज पंचाचार।।

ॐ ह्रूँ ज्ञानाचार गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंयम का होता परिहार, रहे संयम का नित्य विचार।
जीव षट्कादिक की रक्षा, नहीं रहता इन्द्रिय व्यापार।।
महाव्रत समिति पंच त्रयगुप्ति, है तेरह विधि चारित्राचार।
धन्य सूरि विराग सागर, पालते हो नित पंचाचार।।

ॐ ह्रूँ चारित्राचार गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाकर जो इन्द्रिय तन को, आत्मा को करता शुद्ध।
दहन करता है कर्मों को, निर्जरा का जो हेतु विशुद्ध।।
अन्तरंग –बाह्य भेद दो रूप, कहा द्वादशविध तप आचार।।
धन्य सूरि विराग सागर, पालते हो निज पंचाचार।।

ॐ ह्रूँ तपाचार गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिश्रवण, प्रतिसेवा, संवास, तीन अनुमति का करके त्याग।
छिपाना नहीं शक्ति, करना शुद्ध-शुभ चारित्र में अनुराग।।
शक्तिशः त्याग और तपलीन, कहा जिनराज वीर्याचार।।
धन्य सूरि विराग सागर, पालते हो नित पंचाचार।।

ॐ ह्रूँ वीर्याचार गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र, तप और वीर्याचार।
आत्मसिद्धि का हेतु यह कहा है पंचाचार।।
पालें पंचाचार जो, आगम के अनुसार।
जय विराग सागर सुधी, चरण नमूँ शत बार।।

ॐ ह्रूँ पंचाचार गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक अर्घ्य

गुरु विराग गुण महिमा गा, हर्ष मनायें रे।
षट् आवश्यक के हो-हो शुभ अर्घ्य चढ़ायें रे।।
सामायिक नित पाल रहे, रागद्वेष नित टाल रहे।
त्रस-थावर सब जीवों में, समता भाव सँभाल रहे।।
आर्त्त-रौद्र परिहार करें, धर्मध्यान व्यवहार धरें।
अपनी चर्या का पालन, आगम के अनुसार करें।।
समता में रहकर समता दिखलाये रे।

ॐ ह्रूँ समताआवश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के पाद युगल, अर्चा करते भाव विमल।
स्तुतियों में मग्न रहें, ले शुभ नामों का सम्बल।।

आप्त गुणों को गाते हैं, गुणमय ध्यान लगाते हैं।
मन वच काय त्रियोगों से, सादर शीश झुकाते हैं।।
स्तुति चौबीसी, गुरुवर नित गायें रे।

ॐ ह्रूँ स्तवनावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों की अरिहन्तों की, अहा ! सभी भगवन्तों की।
प्रतिपाद जिनबिम्बों की, ज्येष्ठ दिगम्बर सन्तों की।।
कोई तप से श्रेष्ठ गुरु, कोई श्रुत से श्रेष्ठ गुरु।
आत्मगुणों के अनुभव से, कोई गुण से श्रेष्ठ गुरु।।
नित वंदना से जीवन महकाये रहे।

ॐ ह्रूँ वंदनावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष कोई ज्ञातादि से, या फिर अज्ञातादि से।
द्रव्य क्षेत्र कालादि में, हुये अशुभ योगादि से।।
निन्दा गर्हा संबोधन, शुभ योगादि से शोधन।
करते स्वयं कराते हैं, प्रतिक्रमण सूरि मुनिजन।।
प्रतिक्रमण आवश्यक से दोष हटाये रहे।

ॐ ह्रूँ प्रतिक्रमणावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान व आगामी, छह अयोग्य त्यागें ज्ञानी।
कृत कारित अनुमोद से, त्याग करें मुनिवर ध्यानी।।
चारों आहारादि का, दोष मुक्त द्रव्यादि का।
तपश्चरण के हेतु करें, त्याग योग्य-द्रव्यादि का।।
प्रत्याख्यानी ही निर्दोष कहाये रे।

ॐ ह्रूँ प्रत्याख्यानावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहा ! दैवसिक व रात्रिक, पाक्षिक वा चातुर्मासिक।
वार्षिक नियम क्रियायें जो, कहलाती प्रतिक्रम आदिक।।
निजवर का शुभ ध्यान करें, मन से ही गुणगान करें।
तन का ममत्व हटाकर के, कायोत्सर्ग महान करें।।
ऐसे गुरुवर को हम हृदय बुलाये रे।

ॐ ह्रूँ कायोत्सर्गावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

सिद्धों की अरिहन्तों की, अहा ! सभी भगवन्तों की।
प्रतिपाद जिनबिम्बों की, ज्येष्ठ दिगम्बर सन्तों की।।
कोई तप से श्रेष्ठ गुरु, कोई श्रुत से श्रेष्ठ गुरु।
आत्मगुणों के अनुभव से, कोई गुण से श्रेष्ठ गुरु।।
नित वंदना से जीवन महकाये रहे।

ॐ ह्रूँ वंदनावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष कोई ज्ञातादि से, या फिर अज्ञातादि से।
द्रव्य क्षेत्र कालादि में, हुये अशुभ योगादि से।।
निन्दा गर्हा संबोधन, शुभ योगादि से शोधन।
करते स्वयं कराते हैं, प्रतिक्रमण सूरि मुनिजन।।
प्रतिक्रमण आवश्यक से दोष हटाये रहे।

ॐ ह्रूँ प्रतिक्रमणावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान व आगामी, छह अयोग्य त्यागें ज्ञानी।
कृत कारित अनुमोद से, त्याग करें मुनिवर ध्यानी।।
चारों आहारादि का, दोष मुक्त द्रव्यादि का।
तपश्चरण के हेतु करें, त्याग योग्य-द्रव्यादि का।।
प्रत्याख्यानी ही निर्दोष कहाये रे।

ॐ ह्रूँ प्रत्याख्यानावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहा ! दैवसिक व रात्रिक, पाक्षिक वा चातुर्मासिक।
वार्षिक नियम क्रियायें जो, कहलाती प्रतिक्रम आदिक।।
निजवर का शुभ ध्यान करें, मन से ही गुणगान करें।
तन का ममत्व हटाकर के, कायोत्सर्ग महान करें।।
ऐसे गुरुवर को हम हृदय बुलाये रे।

ॐ ह्रूँ कायोत्सर्गावश्यक गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

दस धर्म अर्घ्य

मुनि उत्तम क्षमा करें जी, नहि क्रोध काय रमें जी।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रूँ उत्तम क्षमा गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृदुता में रमण करें जी, नहिं मान कषाय धरें जी।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रूँ उत्तम मार्दव गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच तन सरल बनाये, माया कषाय विनशाये।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रूँ उत्तम आर्जव गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शुचिता प्रगटाई, तुम लोभ पाप विनसाई।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रूँ उत्तम शौच गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत वचन सदा आचरते, संशय वच न उच्चरते।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रूँ उत्तम सत्य गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय प्राणी संयम को, मुनि पालें पढ़ आगम को।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ ह्रूँ उत्तम संयम गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

निश्चय-व्यवहार तपें जी, दुठ आठों कर्म खपें जी।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ हूँ उत्तम तप गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यन को नहि चावें, मुनि त्याग धर्म अपनावें।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ हूँ उत्तम त्याग गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु मात्र नहीं पर मेरा, चिन्तैं निज से सुख मेरा।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ हूँ उत्तम आकिंञ्चन्य गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामति स्वाहा।

निज-पर तिय नेह निवारें, निज ब्रह्म रमें व्रत धारें।
सूरि विराग पद ध्याऊँ, पूजाकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ हूँ उत्तम ब्रह्मचर्य गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह तप

आत्म साधना नित्य बढ़ाते, अनशन तप को मुनि अपनाते।
बेला, तेला, पक्ष महीना, निज शक्ति से तप को ध्याते।।
अनशन तप आचरते गुरुवर, अष्टकर्म को दहते गुरुवर।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ हूँ अनशन गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहार ग्रास बत्तीसा, ऊनोदर तप धरें मुनीशा।
एक ग्रास कम करते जाते, आत्मशक्ति को नित्य बढ़ाते।।
गुरुवर ऊनोदर तप धारी, चर्या गुरुवर की हितकारी।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्यं चढ़ायें।।

ॐ हूँ ऊनोदर तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

गृह, दाता, परिमाण विशेता, बर्तन, गली, बाजार, नरेशा।
नाना भोजन नियम धरें जो, नहीं मिले उपवास करें जो।।
गुरुवर निश्चय तप प्रजालते, वृत्ति परिसंख्यान पालते।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें; कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ हूँ वृत्ति परिसंख्यान गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूध दही घी तेल लवण गुड़, तिक्त, अम्ल, कटु, मधुर, कषायल।
प्रासुक षट्रस भी मुनि त्यागें, तप बढ़ावने तप अनुरागें।।
गुरुवर रस परित्याग पालते, नहिं मन के अनुसार चालते।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ हूँ रस परित्याग तपों गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रमत्त मुनि का शयनासन, होता नित एकांत भवन-वन।
जहाँ न रहती गाय तिर्यंची, देवी, स्त्री और गृहीजन।।
गुरु विविक्त शय्यासनधारी, चर्या है आगम अनुसारी।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ हूँ विविक्त शय्यासन तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर कायक्लेश आचरते, नित आतमबल परखा करते।
वृक्षमूल, अभ्रावकाश वा, आतापन से न डरते हैं।।
आसन पर शासन करते हैं, कायक्लेश मुनिजन सहते हैं।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ हूँ कायक्लेश तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार, अनाचार इत्यादि प्रकार।
पाप पूर्वकृत सब धुल जाता, प्रायश्चित्त विधि अनुसार।।
गुरु आगम अनुसार चलाते, दसविध प्रायश्चित्त पालते।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ हूँ प्रायश्चित्त तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित तप जानो, पंचम जो उपचार पिछानो।
पंच विनय पंचम गति दाई, अर्हत् वचन सुश्रद्धा मानो।।
गुरुवर विनय महातप धारें, दीर्घ कर्म क्षण में निखारें।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

Scanned with CamScanner

ॐ ह्रूँ विनय तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दसविध मुनि पर हो आपत्ति, मुनिजन करते वैयावृत्ति।
वसति आहार, शास्त्र, औषधि से करते, नहीं छुपाते शक्ति।।
गुरुवर वैय्यावृत्य करें जी, वात्सल्य का भाव धरें जी।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रूँ वैय्यावृत्य तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिवर्तन, वाचना, पृच्छना, धर्मकथा अनुप्रेक्षा करना।
स्वाध्याय तप परम जानिये, इस बिन नहीं मुक्ति आचरना।।
गुरुवर स्वाध्याय नित करते, शुद्धातम में अहा विचरते।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रूँ स्वाध्याय तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि परिग्रह अभ्यन्तर, क्षेत्र आदि हैं बाह्य निरन्तर।
तप व्युत्सर्ग जहाँ पर होता, रहे न परिग्रह बाह्याभ्यन्तर।।
गुरुवर तप व्युत्सर्ग ध्यावते, परम समाधि सहज पावते।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रूँ व्युत्सर्ग तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्तरौद्र द्वय ध्यान न करते, धर्मध्यान ही निज आचरते।
शुक्लध्यान मुक्ति का कारण, भावन शुक्ल ध्यान की करते।।
गुरुवर आत्मध्यान लवलीना, सहजानन्द स्वभाव प्रवीणा।
सूरि विराग सिंधु गुण गायें, कर्म नाशने अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रूँ ध्यान तपो गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप धारी, आत्म बिहारी, करुणा धारी, शिवकारी।
निज पर उपकारी, भव भय हारी, अघ निरबारी, गुणधारी।।
हे धर्म नरेशा, चरित अशेषा, ज्ञान विशेषा, हितकारी।
तव रूप निहारूँ, चरण पखारूँ, हाथ धरूँ, कंचन झारी।।

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

जाप- ॐ ह्रूँ आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

करुणा के अवतार हो, भवि के तारणहार।
गुरु विराग द्वय पद नमूँ, निज त्रय योग सम्हार।।

जय जय विराग सूरी महन्त, जय जय इस युग के श्रेष्ठ सन्त।
जय निस्पृहयोगी दयावन्त, यश गूँज रहा तव दिग्-दिगन्त।।
छत्तीस मूलगुण के धारी, महकाई निज चेतन क्यारी।
भविजन को शिव मग दिखलाते, कहलाते हो शिवमगचारी।।
मन वचन काय त्रय गुप्ति धरें, निज शुद्धातम अनुभूति करें।
भव वर्धमान करने वाले, कर्मों का आस्रव शीघ्र हरें।।
पा लिया पंच आचार सार, निज दर्श हेतु दर्शनाचार।
चारित विधि युत चारित्राचार, तप विधि बतलावे तपाचार।।
निज ज्ञान हेतु आचार ज्ञान, पुरुषार्थ वीर्याचार जान।
जो अशुभ भाव की करे हान, वो षट्आवश्यक अवश जान।।
शुभ अशुभ माँहि समता धराय, सामायिक आवश्यक कहाय।
अरिहन्त सिद्ध स्तुति गाय, जिनबिम्वनि की वंदन कराय।।
व्रत शुद्धि हेतु प्रतिक्रमण जान, है त्याग रूप प्रत्याख्यान।
तन की ममता का करें त्याग, कायोत्सर्ग करि चित्त पाग।।
निज धर्म हेतु दसधर्म लीन, नित उत्तम क्षमा धरम प्रवीण।
मार्दव से मान निवार दियो, आर्जव से माया चूर कियो।।
शुचिता से तुम संतोष धरा, सत्धर्म प्रगट कर झूठ हरा।
संयम से जीवन शुद्ध किया, तप तपकर आतम विशुद्ध किया।।
परवस्तु और परभाव त्याग, आकिंचन्य योगी वीतराग।
निज ब्रह्मचर्य में आप लीन, अनुभव करते निज रस नवीन।।
वसु कर्मों का करते निदान, करते द्वादश तप अनुष्ठान।
अनशन कर शक्ति बढ़ावत हो, ऊनोदर से मन मारत हो।।
वृति परिसंख्या धर पुण्य लखो, कर रस परित्याग अरस परखो।
विधि युत विविक्त शय्या धरते, नित कायक्लेश सहन करते।।

Scanned with CamScanner

जानो यह तप बहिरंग छहों, अब अन्तरंग छहरूप कहौं।
प्रायश्चित्त तप निज शुद्धि काज, तप विनय धरे निज गुण समाज।।
वैय्यावृत्ति है वात्सल्य, स्वाध्याय परम तप मिटे शल्य।
व्युत्सर्ग मूर्च्छा दोय त्याग, तप ध्यान मिटाता राग आग।।

छत्तीस गुण मंडित, आगम पंडित, ध्यान अखंडित, मुक्ति करा।
श्रीचरणा आऊँ शरणा पाऊँ, शीश नवाऊँ शान्तिकरा।।

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशद्गुणसहित आचार्य विराग सागर मुनीन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि विराग सागर सुधी, श्रमणों के सिरताज।
शुभ "विमर्श" चरणा नमूँ, कर्म हानि के काज।।
(शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपामि)

रजत जयंती मुनि दिवस, रचा विधान सहर्ष।
अर्पित श्रद्धा भक्ति मम, चरणों विनत "विमर्श"।।
(आचार्यश्री के चरणों में तीन बार नमोस्तु करें)

प.पू. श्रमणाचार्य श्री १०८ विमर्श सागर जी महाराज